ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 44, अंक 7 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 4 जनवरी, 2021 से रविवार 10 जनवरी, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अभी न जागे तो बहुत देर हो जाएगी - फेसबुक वैबिनार में सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी का उद्बोधन

जय भीम-जय मीम का नारा एक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र

समाधान पर चिन्तन करना हम सबकी जिम्मेदारी

.... 3 जनवरी, 2021 राष्ट्र निर्माण पार्टी द्वारा आयोजित वैबिनार कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने अपनी चिर-परिचत सरल-सहज शैली में राष्ट्र की वर्तमान स्थिति से मानव समाज को अवगत कराते हुए अपना विशिष्ट चिंतन उद्बोधन के रूप में प्रस्तुत किया। इस अवसर पर राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष श्री आनंद कुमार जी, दानवीर वेदालंकार जी, श्री जयपाल जी, श्री सत्यानन्द आर्य जी, श्री मनोज जी तथा राष्ट्र निर्माण पार्टी के सैंकड़ों कार्यकर्त्ता और अनेक आर्यजन इस वैबिनार से जुड़े हुए थे।....

जय भीम, जय मीम का नारा आज एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र है लेकिन ये हमारी अपनी ही कमजोरी है। जिसका वे लाभ उठा रहे है। आज हमें अपनी कमजोरी को पहचानना है क्योंकि अगर हम कमजोर न होते तो हमें इस षड्यन्त्र का सामना नहीं करना पड़ता। हमने अपना दरवाजा चोरों के लिए खुला छोड़े रखा और हम इस गलतफहमी में रहे कि हमारे पास बहुत कुछ हैं। हमारे यहां कमी आने वाली नहीं है। चोर अगर चुराता है तो चुरा ले हमारा कुछ बिगड़ने वाला नहीं है। इस ऐतिहासिक तथ्य की पुष्टि के लिए हमारे यहां मंचों से अक्सर एक शेर बोला जाता रहा है-

यूनान, रोम मिस्र मिट गए जहां से,
बाकी बचा है जग में नामोनिशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन, दौर जहां हमारा।।

यह गौरवगान गाते हुए अगर हम गहराई से चिंतन करें तो यह स्पष्ट होता है कि हम मिटने वाले नहीं है; बल्कि मिट चुके हैं। हम अमेरिका, यूरोप, चीन, जापान, इंडोनेशिया, मलेशिया, अफगानिस्तान, इराक, ईरान, पाकिस्तान, कश्मीर, केरल इत्यादि से मिट चुके हैं। इसका सबसे बड़ा कारण हमारी कमजोरी है और वह कमजोरी और कुछ नहीं हिंदू समाज के वर्ग द्वारा वेदों का गलत अर्थ किया जाना ही इसकी जड़ है। क्योंकि उस समय ब्राह्मणों द्वारा अपने आपको शक्तिशाली सिद्ध करने के लिए, वैदिक ज्ञानधारा का गलत चिंतन, मनन और प्रस्तुतीकरण किया गया। क्योंकि इनके मन में यहीं इच्छा थी कि अन्य समस्त जातियों के ऊपर शासन करने के लिए उन्हें नीचा, अलग-थलग करना जरूरी समझा। इसके लिए इन्होंने वैदिक धर्म, संस्कृति, संस्कार और परंपराओं को मिटाकर अपने रसूख को, पद-प्रतिष्ठा को ऊंचा रखने के लिए नई मनगढ़ंत परंपराओं को जन्म दिया। उसी का परिणाम है कि आज हम इस भयंकर स्थिति में हम चिंतन कर रहे है क्योंकि उन लोगों ने इसी का लाभ उठाया और जितनी भी दलित-पिछड़ी जाति के हमारे भाई हैं उन्हें अपने साथ मिलाकर यह कहना आरंभ किया कि ये तो उन्हें अपना मानते ही नहीं हैं। यहां तो तुम्हारा मान-सम्मान, इज्जत कुछ है ही नहीं। इसलिए तुम हमारे साथ आ जाओ और उसी को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने नारा दिया **"जय भीम और जय मीम"** जय भीम का मतलब यहां महाभारत वाले भीम का नहीं है बल्कि भीम का अर्थ है भारत के संविधान निर्माता श्री भीम राव अंबेडकर जी और उनके साथ में मुसलमानों ने अपने आपको जोड़कर इस नारे के श्लोगन के रूप में खड़ा कर दिया।

इस षड्यन्त्र के तथ्यों को समझने के लिए आप भारत की कुल जनसंख्या को तीन हिस्सों में बांट दीजिए। पहली मुस्लिम, इसाई और कुछ अन्य लोग इनको लगभग 30 प्रतिशत समझिए। दूसरा और तीसरा हिस्सा 70 प्रतिशत समझिए जिसमें अगड़े और पिछड़े 35-35 प्रतिशत कुल योग 100 प्रतिशत हो गया। पिछड़े का मतलब है एस.सी, एस.टी. और अगड़े का मतलब आप समझते ही हैं, सुवर्ण जाति। राजनेताओं के लिए ये तीन हिस्से अपने आपमें महत्वपूर्ण हैं। आज लोकतंत्र का तकाजा है, अब राजतंत्र नहीं है। क्योंकि जंगल का राजा अब शेर नहीं होता। अब राजा वही होता है जिनकी जनसंख्या ज्यादा होती है। अगर गीदड़ों की जनसंख्या ज्यादा है तो गीदड़ ही राजा बनेगा। चूहों की जनसंख्या ज्यादा होगी तो चूहा ही राजा बनेगा। इसी परिस्थिति का लाभ उठाकर तीन धड़ों में से कोई दो धड़े मिलकर राजसत्ता पर काबिज हो सकते हैं। इसी की तैयारी के लिए एक बहुत बड़ा प्लेटफार्म तैयार किया गया। इसके लिए हर तरह की शक्ति जुटाई गई और जय भीम और जय मीम का नारा दिया गया। यह नारा पूरी तरह से राजनीतिक नारा है। इसमें कहीं पर भी धर्म की पुट दिखाई नहीं देती। इसका सीधा सा अर्थ है कि पहले जनसंख्या बढ़ाओ और धर्मान्तरण करो, मतान्तरण करो या विचारों का अन्तरण करो। लेकिन लक्ष्य एक ही

- शेष पृष्ठ 4 एवं 7 पर

सौंदीर्यकरण के नाम पर चांदनी चौक में हनुमान मंदिर तोड़े जाने की आर्य समाज द्वारा-घोर निंदा एवं भर्त्सना

आर्य समाज का सरकार से आग्रह-दोषियों पर उचित कार्यवाही के साथ सरकारी खर्चे से हो पुन: उसी स्थान पर मंदिर निर्माण

गत दिनों दिल्ली के चांदनी चौक में स्थित प्राचीन हनुमान मंदिर को तोड़े जाने की आर्य समाज के शीर्ष नेतृत्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के पदाधिकारियों ने घोर निंदा और भर्त्सना करते हुए दोषियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही एवं उसी स्थान पर मंदिर के पुन: निर्माण की मांग की। ज्ञात हो कि यह हनुमान मंदिर काफी पुराने समय से हिंदुओं की आस्था और निष्ठा का केंद्र रहा है। चांदनी चौक के सौंदर्यीकरण के नाम पर इसको तोड़ा जाना बड़े ही दुर्भाग्य की बात है। इसको लेकर हिंदुओं के कई धार्मिक संगठनों ने विरोध प्रदर्शन भी किया। जिसमें पुलिस के साथ तीखी नोक-झोक भी हुई। किंतु सबसे ज्यादा विचारणीय बात यह है कि भारत देश में हिंदुओं के मंदिर को तोड़ना और केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा

एक-दूसरे को आरोपी सिद्ध करना कहां तक उचित है? दिल्ली की शान कहे जाने वाले चांदनी चौक में यह मंदिर अपने आपमें अनुपम था। चांदनी चौक सर्वव्यापार मंडल के अध्यक्ष श्री संजय भार्गव ने अपने बयान में कहा कि चांदनी चौक के सौंदर्यीकरण का मामला दिल्ली हाई कोर्ट की निगरानी में चल रहा है। प्रशासन ने वर्ष 2014 में 5 धार्मिक स्थलों की पहचान की थी। 2016 में उनमें 3 हटाए गए और एक धार्मिक स्थल को प्रशासन द्वारा 3 जनवरी 2021 को सुबह हटाया गया। इस पर राज्य सरकार के प्रवक्ता सौरभ भारद्वाज ने भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि उत्तरी नगर निगम के आयुक्त ने कोर्ट में शपथ पत्र देकर धार्मिक स्थल तोड़ने की तारीक बताई थी। भाजपा शासित एम.सी.डी के उपायुक्त सतनाम सिंह ने कोर्ट में शपथ पत्र दायर कर कहा था कि त्यौहारों के चलते हम धार्मिक स्थल नहीं हटा पाए लेकिन अब उसकी तैयारी पूरी हो चुकी है। जबकि भाजपा के सांसद मनोज तिवारी का कहना है कि इस घटना के पीछे गहरी साजिश है। जिसके तहत हजारों लोगों की भावनाओं को आहत करने और आस्था पर चोट करने का काम दिल्ली सरकार ने किया है। अतिक्रमण कर बनाए गए कई धर्म स्थलों को हटाने की सिफारिश के बीच इसी धार्मिक स्थल को क्यों निशाना बनाया गया? इस सब बयानबाजी और दिखावे की राजनीति से अलग आर्य समाज इस अमानवीय कृत्यके लिए चाहे जिम्मेदार कोई भी क्यों नहीं हो इसकी पुरजोर निंदा करता है। यह भारतीय संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों के विपरीत कार्य है। अत: हम पुन: सरकार से यही आग्रह करते हैं कि उसी स्थान पर हनुमान मंदिर का निर्माण किया जाए और भविष्य के लिए यह सुनिश्चित किया जाए कि आगे से कोई भी ऐसी हिमाकत न करे।

सम्पादकीय

चीन द्वारा दलाई लामा बनाने की अजीबो-गरीब दास्तान

अब नकली दलाई लामा बनाने की तैयार में है चीन

अमेरिका ने तिब्बत में दलाई लामा चुनने की प्रक्रिया में चीनी सरकार की दखलदांजी का कड़ा विरोध किया है। तिब्बत में धार्मिक-आजादी के समर्थन में अमेरिकी संसद ने एक नया कानून पारित भी किया है। इस नए कानून में साफ तौर से कहा गया है कि जब बौद्ध धर्म का पालन भारत, नेपाल, भूटान और मंगोलिया जैसे देशों में भी किया जाता है तो पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चायना यानि पीआरसी की सरकार इसमें टांग क्यों अड़ाती है। हालांकि, इस बिल को इस साल की शुरुआत में अमेरिकी संसद में पेश किया गया था लेकिन अब इसे पारित किया गया।

तिब्बत में दलाई लामा बौद्ध धर्म के सबसे बड़े धर्मगुरु गुरु माने जाते हैं और एक पंरपरा के तहत उन्हें चुना जाता है। लेकिन तिब्बत पर कब्जे के बाद से चीन की कम्युनिस्ट सरकार अपनी मर्जी से पंचेन-लामा और दलाई लामा चुनने का दावा करती है। जबकि बौद्ध धर्म के अनुयायी दलाई लामा को एक रूपक की तरह देखते हैं। इन्हें करुणा के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

दूसरी तरफ इनके समर्थक अपने नेता के रूप में भी देखते हैं। इन्हें ओशन ऑफ विजडम भी कहा जाता है दलाई लामा को मुख्य रूप से शिक्षक के तौर पर देखा जाता है। तिब्बती बौद्ध धर्म के नेता दुनिया भर के सभी बौद्धों का मार्गदर्शन करते हैं। मसलन लामा को आप बौद्ध संत भी कह सकते हैं। अब सवाल है जब बुद्ध का जन्म यहाँ हुआ और उन्हें निर्वाण भी यही प्राप्त हुआ तो तिब्बत में उनके उत्तराधिकारी क्यों बनते हैं तो इसके पीछे भी एक दिलचस्प किस्सा है। बताया जाता है 1630 के दशक में तिब्बत के एकीकरण के वक्त से ही बौद्धों और तिब्बती नेतृत्व के बीच लड़ाई है। मांचु, मंगोल और ओइरात के गुटों में यहां सत्ता के लिए लड़ाई होती रही है। अंतत: पांचवें दलाई लामा तिब्बत को एक करने में कामयाब रहे थे। इसके साथ ही तिब्बत सांस्कृतिक रूप से संपन्न बनकर उभरा था। जेलग बौद्धों ने 14वें दलाई लामा को भी मान्यता दी, और 13वें दलाई लामा ने 1912 में तिब्बत को स्वतंत्र घोषित कर दिया था।

इसके करीब 40 सालों के बाद चीनी सेना ने तिब्बत पर आक्रमण किया। चीन का यह आक्रमण तब हुआ जब वहां 14वें दलाई लामा को चुनने की प्रक्रिया चल रही थी। तिब्बत को इस लड़ाई में हार का सामना करना पड़ा। कुछ सालों बाद तिब्बत के लोगों ने चीनी शासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया। ये अपनी संप्रभुता की मांग करने लगे। हालांकि इसमें तिब्बतियों को सफलता नहीं मिली। अब इनके धर्मगुरु दलाई लामा को लगा कि वह बुरी तरह से चीनी चंगुल में फंस जाएंगे। इसी दौरान उन्होंने भारत का रुख किया। अब तक वह निर्वासन की ही जिंदगी जी रहे हैं। लेकिन अब वह काफी बुजुर्ग हो गये हैं, जीवन के अनेकों बसंत देख चुके तेनजिन ग्यात्सो यानि दलाई लामा के उत्तराधिकारी का चुनाव होना निश्चित है ताकि तिब्बतियों को अपना धर्म गुरु या तिब्बत की स्वतंत्रता का ध्वज वाहक मिल सके। लेकिन चीन क्यों दलाई लामा का चुनाव अपने तरीके से चाहता है। यदि कारण तलाश किया जाये तो निकलकर आता है कि वर्तमान दलाई लामा पिछले कई दशकों से तिब्बत को चीन से आजाद करने की मुहिम चला रहे हैं। अगर उत्तराधिकारी खुद दलाई लामा द्वारा चुना जाए तो वो भी आजाद तिब्बत के लिए मुहिम चलाएगा। चीन ये नहीं चाहता। यही वजह है कि वो अपनी ओर से किसी को दलाई लामा का वारिस बनाना चाहता है ताकि वो चीन के प्रभाव में रहे। इससे तिब्बत में आजादी की मुहिम कमजोर पड़ जाएगी।

वर्तमान दलाई लामा ने भारत ने तब शरण ली, जब वे सिर्फ 23 साल के थे, तब से वे हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में रह रहे हैं। इधर उन्हें पकड़ने में नाकामयाब चीन ने गुस्से में उनके उत्तराधिकारी पंचेन लामा को लगभग 25 साल पहले अगवा कर लिया। तब से पंचेन लामा की कोई खबर नहीं है। माना जा रहा है कि उन्हें चीन ने राजनैतिक बंदी बना रखा है। साल 1995 में गेधुन को 11वां पंचेन लामा के तौर पर पहचाना गया। यानी 6 साल का गेधुन तब तिबब्त में दलाई लामा के बाद दूसरा सबसे शक्तिशाली व्यक्ति हो गया। इसके 3 दिनों बाद ही गेधुन एकाएक लापता हो गया। तब से मानवाधिकार कार्यकर्ता गेधुन को सबसे कम उम्र का राजनैतिक बंदी बताते हुए उसकी रिहाई की पिछले 25 सालों से मांग करते रहे हैं।

हो सकता है गेधुन पंचेन लामा जीवित हो और ये भी हो सकता है कि वह जिन्दा ना हो इसी वजह से चाइना अब अपना नकली लामा खड़ा करना चाहता है क्योंकि तिब्बतियों में इसे लेकर एक बेहद रोचक मान्यता है। इनके मुताबिक, जब कभी एक दलाई लामा मरता है, तो वह एक नए रूप में दोबारा से धरती पर जन्म लेता है। इसके बाद धर्म अधिकारी उस बच्चे की खोज करते हैं और फिर उसे ही अगला दलाई लामा नियुक्त किया जाता है। लेकिन इसमें दलाई लामा को किस प्रकार खोजा जाता है ये भी काफी दिलचस्प किस्सा है, इसमें पहली बात तो ये है कि दलाई लामा को कोई चुनता नहीं बल्कि उन्हें खोजा जाता है। तिब्बतियन मान्यता के मुताबिक उनके दलाई लामा एक ही रहते हैं। बस समय के साथ-साथ उनका रूप बदलता रहता है क्योंकि दलाई लामा का चयन पुनर्जन्म की मान्यता पर अधारित है। इसलिए लामा की मृत्यु के बाद नए लामा की खोज का दायित्व गेलगुपा परंपरा के मुताबिक उच्च लामास और तिब्बत सरकार का रहता है। हालांकि, इस खोज में कई वर्ष लग जाते हैं।

बताया जाता है तिब्बत के वर्तमान 14वें दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो को खोजने में

......तिब्बत के वर्तमान 14वें दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो को खोजने में 4 वर्षों का समय लगा था। इस खोज की शुरुआत उच्च लामा को दिखने वाले दृश्यों व सपनों से होती है। इसके बाद ही आगे की खोज आरंभ की जाती है। एक और प्रथा के मुताबिक अगर पिछले दलाई लामा के मरने के बाद उन्हें जलाया जाता है, तो उनकी चिता से उठने वाले धुएं पर ध्यान दिया जाता है। उनके मुताबिक यह धुआं लामा के पुनर्जन्म का संकेत देता है। अपनी इस खोज प्रक्रिया के दौरान उच्च लामा अक्सर केंद्रीय तिब्बत की पवित्र नदी ला-तसो के पास जाकर ध्यान लगाते हैं। वहां पर ध्यान लगाते हुए वह, अगले संकेत का इंतजार करते हैं। कहते हैं कि इससे उन्हें आगे किस दिशा में बढ़ना है यह पता चलता है। नदी में इस प्रकार से ध्यान लगाने के पीछे तिब्बती लोगों की एक धारणा है। उसके मुताबिक इस पवित्र नदी की पवित्र आत्मा ने प्रथम दलाई लामा को वचन दिया था, कि उनके वंशज को ढूंढने में यह सदैव उनकी सहायता करेगी।......

4 वर्षों का समय लगा था। इस खोज की शुरुआत उच्च लामा को दिखने वाले दृश्यों व सपनों से होती है। इसके बाद ही आगे की खोज आरंभ की जाती है।

एक और प्रथा के मुताबिक अगर पिछले दलाई लामा के मरने के बाद उन्हें जलाया जाता है, तो उनकी चिता से उठने वाले धुएं पर ध्यान दिया जाता है। उनके मुताबिक यह धुआं लामा के पुनर्जन्म का संकेत देता है। अपनी इस खोज प्रक्रिया के दौरान उच्च लामा अक्सर केंद्रीय तिब्बत की पवित्र नदी ला-तसो के पास जाकर ध्यान लगाते हैं। वहां पर ध्यान लगाते हुए वह, अगले संकेत का इंतजार करते हैं। कहते हैं कि इससे उन्हें आगे किस दिशा में बढ़ना है यह पता चलता है। नदी में इस प्रकार से ध्यान लगाने के पीछे तिब्बती लोगों की एक धारणा है। उसके मुताबिक इस पवित्र नदी की पवित्र आत्मा ने प्रथम दलाई लामा को वचन दिया था, कि उनके वंशज को ढूंढने में यह सदैव उनकी सहायता करेगी।

इसलिए उस हर बार दलाई लामा को खोजने के लिए यहाँ पर आया जाता है। माना जाता है कि यहाँ आने के बाद ही दलाई लामा की खोज पूरी हो पाती है। इसके बाद मिले गए संकेतों के आधार पर ही, उस बच्चे को खोजा जाता है, जिसकी किस्मत में दलाई लामा बनना लिखा होता है। एक बार, जब उस बच्चे को खोज लिया जाता है, तो उसकी कई परीक्षाएं ली जाती हैं। यह इस बात को प्रमाणित करने के लिए होता है कि वही असली लामा वंशज है। इसके लिए उससे कुछ विशेष कार्य करवाए जाते हैं, उनके द्वारा देखा जाता है कि वह सही चयन है कि नहीं। इसके अलावा उससे कुछ खास चीजों की पहचान करवाई जाती है। यह सभी चीजें पिछले दलाई लामा से संबंधित होती हैं।

एक बार यह सब कार्य पूरे हो जाएं, तो फिर उच्च लामा धार्मिक आकलन पर बच्चे को आंकते हैं। सभी प्रमाण सिद्ध होने के बाद ही उसके बारे में सरकार को बताया जाता है। इसके बाद फिर लोगों को बच्चे से परिचित करवाया जाता है। आखिर में बच्चे को बौद्ध धर्म से जुड़ी जानकारी दी जाती है, ताकि वह आगे चलकर धर्म का नेतृत्व कर सकें। यानि एक दलाई लामा बनना इतना भी आसान नहीं है। सिर्फ किस्मत ही यह फैसला करती है कि कौन अगला दलाई लामा बनेगा। लेकिन शी जिनपिंग इन सब प्रक्रिया को किनारे कर अपना खुद का नकली दलाई लामा चाहता है जो उसके इशारे पर यह कह सके कि तिब्बत चीन का हिस्सा है। और तिब्बत की आजादी का सपना हमेशा के लिए दफन हो जाये। लेकिन अब दलाई लामा के चुनाव में अमेरिका भी एक बिल लेकर बीच में कूद पड़ा है इस कारण अब देखना होगा अगला दलाई लामा कौन तय करेगा, तिब्बती समुदाय या चाइना? लेकिन इससे पहले चाइना को दुनिया को यह बताना होगा कि पंचेन लामा गोधून कहाँ है?

– ***सम्पादक***

आर्य समाज से सोशल मीडिया पर जुड़ें
YouTube
Youtube Channel
@thearyasamaj
Subscribe
सब्सक्राइब करें
Facebook Page
@thearyasamaj
Like
लाइक करें
Twitter Handle
@thearyasamaj
Follow
फॉलो करें
Whatsapp Channel
9540045898
इस नम्बर को अपने मोबाइल में save करें और
अपना नाम व स्थान लिखकर भेजें

ज्ञानविज्ञानानामुत्सभूता वेदाः

- डॉ. जितेन्द्र कुमारः

आकरग्रन्थाः चत्वारो वेदाः। चतसृषु वेदसंहितासु विविध विषयाः प्रतिपादिताः। तस्मान्मनुस्मृतौ "सर्वज्ञानमयो हि सः" "सर्वं वेदात् प्रसिद्धयति" इत्येते आभाणके उपलभ्येते। यतो हि भारतीयपरम्परायां वेदा अपौरूषेयाः नित्याः सृष्टेरादिमाश्च। समग्रं वैदिकवाङ्मयं देवानां व्याख्यानभूतं वर्त्तते, वेदानाम् उपजीव्यत्वात्। अतो यावती ज्ञानविज्ञानधारा कृत्स्ने जगति दृग्गोचरी भवति सा वेदादेव निस्सृता प्रसूता च। एषा मान्यता सर्वैः वैदिकैर्विद्वद्भिश्च उररीक्रियते। अहमिह कानिचिद् विविध गणित चिकित्सा वनस्पति नौका विमान यज्ञयोगप्रभृति विज्ञानविषयान् दिग्दर्शन मात्रेण उपस्थापयितुमीहे। येन वयं ज्ञास्यामः यज्ज्ञानागारणि वेदाः तथा वेदेषु विज्ञानस्य मूलभूतबीजरूपाः संक्षिप्तसंकेताः यत्र-तत्र सम्यग्रूपेण समुपलब्धाः। यया - गणितस्य मूलाधारः गणना संख्या चास्ति। संख्यां प्रकटयितुं शून्यमतिशयसहायकम्। सुविज्ञातमिदं तथ्यं यत् शून्यस्य ज्ञानं सर्वप्रथमं भारतीयविदुषाम् ऋषीणां मनसि प्रादुर्बभूव। अस्य मूलसंकेताः अथर्ववेद संहितायां समुपलभ्यन्ते। यत्र विज्ञापितं यत् केन प्रकारेण शून्यप्रयोगेण संख्या दशगुणा सती एधते। यद्यपि एषु मन्त्रेषु शून्यस्य नामोल्लेखपूर्वकं वर्णनं नास्ति तथापि यस्मिन् क्रमे संख्यानामुल्लेखो दरीदृश्यते तेन शून्यस्य स्वतः स्थितिः सुरपष्टा विभाति। अस्मिन् मन्त्रे प्रस्तुता द्वि-द्वि संख्यायोगेन एकादशसंख्याया गुणोत्तरश्रेढी संवृत्ता।

एका च मे दश च मेऽपवक्तार ओषधे।
ऋतजात ऋतावरि ते मधुलाकरः।।

अथर्ववेद - (5.15.1)

द्वे च मे विंशतिश्च मे ..... ।,
तिस्रश्च मे त्रिंशच्च मे.....।,
चतस्रश्च मे चत्वारिंशच्च मे .....।,
पञ्च चं मे पञ्चाशच्च मे .....।।,
षट् च मे षष्टिश्च मे .....।,
सप्त च मे सप्ततिश्च मे ..... ।।,
अष्ट च मेऽशीतिश्च मे .....।,
नव च मे नवतिश्च मे .....।,
दश च मे शतं च मे .....।,
शतं च मे सहस्रं च मे .....।।

अथर्ववेद - (5.15.2-11)

इमा मेऽग्न इष्टका धेनवः सन्त्वेका च, दश च, शतं च, शतं च सहस्रं च, सहस्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च ..... प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्ये चान्तश्च परार्धश्चैता मे .....।। *यजुर्वेद - (17/2)*

यथा - एकादश, द्वाविंशतिः, त्रयस्त्रिंशद् इत्यादिः। वाजसनेयि संहितायामपि अंकानां स्थितिः मन्त्रदर्शित क्रमेण दशगुणा उत्तरोत्तरं वर्धते। इमाः संख्याः अङ्केषु लेखनेन एकं, (1) दश, (10) शतं, (100) सहस्रं, (1000) दशसहस्राणि, (10000) लक्षं, (100000) दशलक्षाणि, (1000000) कोटिः, (10000000) दशकोटयः (100000000) इत्यादिका महापरार्ध पर्य्यन्ता संख्या अष्टादशांकमिता जायते। यद्यपि कापि पुरातनी सभ्यता सहस्रतोऽधिकां सङ.ख्यां न विदाञ्चकार।

अधिकतरां संख्यां निर्मातुं केवलं नवाङ्कं पौनःपुन्येन लेखनीयं, राद्धान्तोऽयं संकेतेन निम्नमन्त्रांशे द्रष्टुं शक्नुमः। अत्र इन्द्रं सम्बोध्य उच्यते - " त्वं भीतः वज्रसदृशः नव (नवतिश्च सर्वतोऽधिकम्) नदीः उत्तीर्य आयाहि "।

एक नियमानुसारेण एकसंख्यायाः कियत्य एव शक्तयः स्युः किंवा एकसंख्यायाः गुणनफलमेकमेव भविष्यति। अथर्ववेदस्याधोलिखितमन्त्रः इमं नियमं ज्ञापयति। मन्त्रार्थः - "शक्तिरियं तस्मिन् प्राप्ता। सोऽयमेकः। एको बलवान्, एक एवाऽस्ति। अस्मिन् सर्वे देवाः एकबलवन्तः भवन्ति। अत्र प्रकारान्तरेण एकस्याः शक्तेः निर्देशः। देवताः विभिन्नसंख्यात्मक शक्तिरूपे ग्रहीतुं शक्नुमः। तासां शक्तीनाम् एकस्याः उपरि अपि तत् "एकमेव" अवतिष्ठते। संक्षेपतो गणितविज्ञानस्य मूलभूता संख्या वेदे समुपलभ्यते। कतिपयानां सिद्धान्तानाम् अपि सूक्ष्मरीत्या चर्चा विहिता वर्त्तते। नात्र कश्चित् सन्देहावसरः।

चिकित्साविज्ञानम्

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यमूलमुत्तमं यदुक्तं तत् सर्वथा समुपयुक्तम् यतो हि रोगरहितजना एव धार्मिकाणां लौकिकानां च कर्मणां सम्पादनाय क्षमन्ते। आरोग्यं प्रदातुं चायुर्वेद एव।

अथर्ववेदस्य सहस्राधिकानि सूक्तानि आयुर्वेदेन सम्पृक्तानि। अस्मिन् त्रिदोषवादः, देहे अग्नेः स्थितिः पाचनक्रिया, गात्रस्याङ्गप्रत्यङ्गानां नामानि, रोगाणां नामानि, कृमीणां विस्तृतवर्णनम्, कृमिघ्नानाम् औषधीनां निर्देशः, चिकित्साया नानाविधप्रकाराः, विष विज्ञानस्य विषयः, शल्य-शालाक्यः, यातुविद्या, रसायनम्, वाजीकरणम्, द्रव्यगुणानां वनस्पतीनाञ्चेति विषयाणां विशदं वर्णनं विहितम्।

अथर्ववेदस्य दशमकाण्डस्य द्वितीय सूक्तस्य एकादशे मन्त्रे शरीरे प्रवाहमानं रक्तधाराचक्रमपि वर्णयामास ऋषिः। मन्त्रस्य शब्दार्थो निम्नरूपेण विद्यते - "अस्मिन् काये केन ता 'आपः' निधाय स्थापिताः, याः शरीरे सर्वतः प्रसृताः, याः परितः प्रसृत्य हृदयापरपर्यायं सिन्धुं आयान्ति यान्ति च। रक्तसर्वस्वं यत् पुरुषस्य शरीरे ऊर्ध्वं सञ्चरत्, नीचैरपि प्रवाहमानम् अपि च शरीरे वामपार्श्वे वामेतरपार्श्वे च सञ्चरति।।

अत्र रक्ताय "आपः" इति पदं प्रयुक्तम्। आपः इति पदस्य मूलयौगिकार्थः प्रसृतः प्रसिद्धः। यतो हि रक्तं देहे सर्वत्र प्रवाहमानं भवति अतः तस्याभिधानं "आपः" इति अन्यर्थकम्। सिन्धुः शब्दस्यापि यौगिकाऽर्थोऽस्ति यं प्रति प्रवहमानो भूत्वा बहिर्गच्छेत्। शरीरस्य अशुद्धं रक्तं सर्वेभ्य अङ्गेभ्यः हृदि गच्छति शुद्धं भूत्वा च हृदः बहिः सर्वेषु अङ्गेषु गच्छति। अतो मन्त्रे हृदे सिन्धुः शब्दोऽपि सार्थकः। हृदयम् इति पदमपि स्वस्मिन् गर्भे स्वार्थं निदधाति। हरतीति हृ, ददाति इति द, यापयतीति य इति त्रिभिः धातुभिः सम्मिश्रणेन हृदयशब्दः निजार्यम् अभिव्यनक्ति। अशुद्धरक्तं परितः हरति नयति वा पुनश्च परिष्कृत्य ददाति अपरञ्च सर्वेष्वङ्गप्रत्यङ्गेषु यापयति प्रापयति इति हृदयम्। तत् एतानि त्रीणि कर्माणि अजस्रगत्या सर्वथा सर्वदा च सम्पादयति तस्मात् तस्याभिधानं हृदयं सार्थकम्।

अथर्ववेदे शल्यचिकित्साया उल्लेखोऽपि अवाप्यते। रोहिणीमौषधिं व्रणस्य, आघातरय, अस्थिभङ्गादीनां च चिकित्सां वदति मन्त्रः। इयं रोहिणी औषधिः मांसरोहिणी विद्यते। आयुर्वेदः इमाम् औषधिं क्षतादीनां पूरयित्रीं प्रतिपादयति। अथर्ववेदे मूत्रामयापहानस्य वर्णनम् उपलभ्यते। मूत्रं बहिः निस्सारयितुं नैके प्रकाराः वर्णिताः। मूत्ररोगं मूत्रकृच्छ्रं वा सौविघ्येन बहिः निस्सारयितुं लोहशलाकायाः बस्तियनत्रस्य वा (कैथेटर) प्रयोगो विहितः। यन्त्रमिदम् अद्यत्वे घर्षकादिकं (रबड़) निर्मितं प्राप्यते। अनेन मूत्रनालेन उपरि प्राप्ते सति अवरुद्धं मूत्रं बहिरागच्छति। विषयेऽस्मिन् आचार्यसायणेन व्याख्यातः एको मन्त्रः यत्र मूत्रवर्त्मनः विदीर्णकरणस्योल्लेखो लभ्यते। एवंविधो मन्त्रः - "हे मूत्र व्याधिपीड़ित! (ते) तव (मेहनम्) मिह्यति सिंचति अनेनेति मेहनं मूत्रनालः तत् (मेहनं प्रभिनद्मि) लोहशलाक्या मूत्रनिर्गमनार्थ विदारयामि। तत्र दृष्टान्तः (वर्त्र) वर्त्तते प्रवहति जलम् अत्रेति वर्त्तो मार्गः। ते (वेशन्त्या इव) विशन्ति तिष्ठन्ति आप इति वेशन्तः पल्वलम्। तत्र भवा आपो वेशन्त्याः। ता यथा सुनिर्गमनमार्ग विदारयन्ति तथेत्यर्थः। (एव) एवम् इत्थं निरुद्धमूत्रनिःसरणाय मार्गस्य कृतत्वात् (ते मूत्रं मुच्यताम्) तव शरीरान्तर्निरुद्धं मूत्रं (बाल्) अनुकरणशब्दोऽयम्। शब्दं कुर्वन् त्वरया निर्गच्छतु इत्यर्थः"।

वेदः शल्यक्रियायाः प्रयोगात्मकज्ञानाय ब्रूते- शरीरं भेत्तुं छेत्तुं चानेकविधानां स्थूलसूक्ष्माणां उपकरणानाम् आवश्यकता भवति। अतः सहस्रप्रकारकाणां फलकानां कठौरैः निशितैश्चोपकरणः स्कन्धाभ्यां शिरो भागं पृथक्कुरु इति निर्देशः। अथर्ववेदे कुशलचिकित्सक माध्यमेन निगदितं यत् - "ममायं हस्तोऽभिमर्शनयुतो सुभगः द्वितीयो हस्तश्च इतोऽप्यधिकं अतिशय भाग्ययुक्त ऋषितुल्यो वर्त्तते। हस्तोऽयं सुखकरः स्पृश्यो भवेत्"। अथर्ववेदस्यै कस्मिन् सूक्ते पाण्डुरोगम् अपाकर्त्तुं सायण प्रभृतिभाष्यकारैः व्याख्यानं समुपस्थापितम्।

वनस्पतिविज्ञानम्

वनस्पतिविज्ञानस्य मूलधारणाऽपि वेदे सूक्ष्मरीत्मा निगूढा वर्त्तते। वेदे वृक्षपादपानाम् आन्तरिकस्वरूपस्य प्रारम्भिकं रूपं समुपलभ्यते। संहितासु, ब्राह्मणेषु, उपनिषत्सु च वृक्षाणां पादपानां विविधाङ्गानां सुव्यक्तरूपेण नामोल्लेखो वर्णनञ्च समायाति। यथा - मूलम्, (Root) तूलम्, (Shoot) काण्डम्, (Stem) शाखा, (Branches) पर्णम्, (Leaves) पुष्पम्, (Flowers) फलानि (Fruits) च।।

बृहदारण्यकोपनिषदि वृक्षस्य तुलना मानवशरीरेण प्रदर्शिता। मनुष्यो बलवान् द्रुमसदृशो विद्यते। वृक्षमनुष्ययोः निम्नलिखितं वैशिष्ट्यं साम्यञ्च वर्त्तते।

मनुष्यः	वृक्षः
1. लोमानि	पर्णानि
2. त्वक्	बाह्यात्वक्
3. रुधिरम्	रसः
4. मांसम्	आन्तरिका त्वक्
5. स्नावम् (Nerves)	किनाटम् (Inner Fiber)
6. अस्थीनि	दारूणि
7. मज्जा (Marrow)	मज्जा (Pith)

(ख) महद् यक्षं भुवनस्य मध्ये, तपसि क्रान्तं सलिलस्य पृष्ठे। तस्मिन् क्रयन्ते य उ के देवाः। वृक्षस्य स्कन्धः परितः इव शाखाः। *द्रष्टव्यम् - ऋग्वेद - (1.32.5)*

ऋग्वेदे पुष्पैः सम्पन्नाः पादपाः कुसुमैः बिना च द्रुमाः फलैर्युताः फलरहिताश्च तरवः निखिलानि तृणानि तृणजातौ समायान्ति। अथर्ववेदे आकृतिम् अन्यानि वैशिष्ट्यानि चाधिश्रित्य तरुगुल्मलतादयः विभिन्नवर्गेषु विभक्ताः।

यथा - (1) प्रस्तृणती (Spreading Variety) (2) स्तम्बिनी (Bushy) (3) काण्डिनी (Jointed) (4) अमुष्मती (Rinch in shoots) (5) एक-शुङ्ग (Single Calyxed) (6) विशाखा (With Spreading Branches) (7) प्रतानवती (Extending) (8) जीवला (Lively) (9) नघारिषा (Harmless) (10) मधुमती (Richly Sweet)। केचन महीरुहाः वर्णदृष्ट्याप्यन्वर्थनामानः वर्त्तन्ते। यथा - बभुः, (Brown) शुक्रा, (White) रोहिणी, (Red) कृष्णा (Black) असिक्नी (Swarthy)।

स्वरूपाकृतेरुदाहरणमथर्ववेदे समुपलभ्यते तद्यया अपामार्गः विपरीत पत्रत्वात् पुनः सरणरूपे (प्रत्यावृत्ते) वर्णनं विधीयते। अरुन्धतीं हिरण्यवर्णा (सुवर्णयुता) लोमशवक्षणा (रोमशा) इत्युदीरिता। अथर्ववेदे वृक्षाणां नानावीर्य वत्वादिकं विशेषणं (नैकशक्ति सम्पन्नत्वम्) प्रतिपाद्यते। वृक्षविशेषणी भूताः ताः शक्तयः चिकित्सकीयगुणैः समवेताः स्युः। औषधिपदञ्च तेभ्यः पादपेभ्यः येषु रोगापहारिका शक्तिः अथवा एतादृश्येव अन्या काचित् अपरिमित शक्तिरूपा भवेत् यो मानवानां कल्याणाय कल्पेत इतो विपरीतं "वीरुध" शब्दः अन्येभ्यः लघुवनस्पतिभ्यः वर्त्तते। तैत्तिरीयसंहितायां[1] वीरुधपदस्य प्रयोगम् "औषधिना" साकं विधाय इदं प्रदर्श्यते यत् चिकित्सकीयगुणयुतापादपान् "औषधिः" चिकित्सकीयगुणरहितवृक्षान् च वीरुधान् ब्रुवन्ति। अतो वक्तुं शक्नुमः यत् भारतवर्षे वनस्पतिविज्ञानस्य बीजाङ्कराः वेदे प्रस्फुटिताः कालान्तरे च पल्लविताः पुष्पिताश्च भूत्वा वनस्पतिविज्ञानरूपे प्रतिफलिताः।

- शेष अगले अंक में

स्वास्थ्य रक्षा

रक्तचाप व हृदय रोग – लक्षण और उपाय

गतांक से आगे –

गर्मी के मौसम में अधिक पसीना आने के कारण शरीर में पानी व लवण की कमी हो जाना, दस्त के कारण शरीर में पानी व लवण तत्वों की कमी हो जाने से भी निम्न रक्तचाप हो जाता है।

उच्चरक्तचाप में लाभप्रद- छाछ पीने से लाभ पहुंचता है, तुरन्त लाभ के लिए आधा कप पानी में आधा नींबू निचोड़कर दिन में दो-तीन बार दो-दो घण्टे के अन्तराल में पीने से तुरन्त लाभ होता है।

निम्नरक्तचाप में लाभप्रद- एक कप पानी में किशमिश भिगो दें। 12 घण्टे भीगने के बाद प्रातःकाल एक-एक किशमिश को खूब चबा- चबाकर खाने से निम्नरक्तचाप में बहुत लाभ होता है। एक माह तक लगातार सेवन करने से पूर्णलाभ प्राप्त होता है।

हृदय रोग-हृदय रोग आज तेजी से फैलता जा रहा है। खान-पान की स्वच्छन्दता, भौतिकवाद की होड़ में तरह-तरह के मांसाहारी एवं गरिष्ठ पदार्थों के प्रति आकर्षण, शारीरिक श्रम की शून्यता, मानसिक तनाव आदि हृदय-रोग की वृद्धि के कारण हैं।

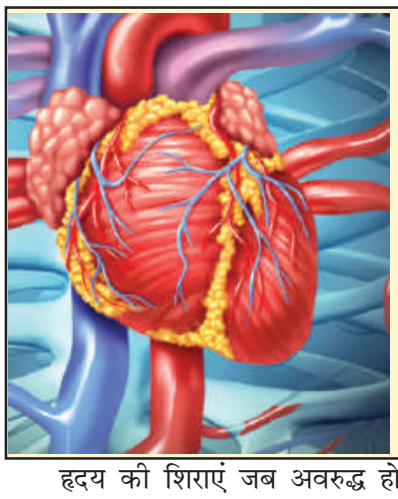

.....जब हृदय अपने पास इकट्ठे हुए रक्त को शरीर में भेजने के लिए सिकुड़ता है तो उस समय जो अधिकतम दबाव बनता है उसे सिस्टोलिक रक्तचाप या प्रकुंचन चाप कहते हैं। शरीर से वापिस लौटे इसी रक्त को ग्रहण करने के लिए जब हृदय ढ़ीला होता है तो उस समय जो प्रेशर बनता है उसे डायस्टोल्कि प्रेशर या अनुशिथिलन रक्त चाप कहते हैं। इन क्रियाओं के सन्तुलित दबाव को रक्तचाप कहते हैं। साधारणतया बच्चों का रक्तचाप 80/50, युवकों का 120/70 तथा प्रोढ़ों का 140/90 होना सामान्य माना जाता है। ....

हृदय की शिराएं जब अवरुद्ध हो जाती हैं तो हृदयघात की सम्भावना बन जाती हैं। अधिक चिकनाईयुक्त वसायुक्त भोजन खून में थक्के जमाता है तथा उसीका कुपरिणाम शिराएं अवरुद्ध होने के रूप में सामने आता है।

आधुनिक विज्ञान ने हृदय रोग के निदान के लिए बाईपास सर्जरी, पेसमेकर-जैसी अनेक अत्यन्त खीर्चीली सुविधाएं ईजाद की हैं, किंतु इनका उपयोग साधारण रोगी नहीं कर सकता है और यह भी तथ्य सामने आए हैं कि ऑपरेशन कराने वाले को जीवन भर अनेक अन्य बीमारियों का सामना भी करना पड़ता है।

घीया (लौकी) हृदय रोग में रामबाण औषधि सिद्ध हुआ है। अनेक हृदय रोगियों ने इसका उपयोग किया और रोग से छुटकारा पाया है, हृदय रोगियों के लिए इस अनुभूत प्रयोग की विधि इस प्रकार है-

घीया को छिलके सहित धोकर घीयाकश में कस लें। कसी हुई घीया को सिलबट्टे पर पीस लें। ग्राइंडर में डालकर भी उसका रस निकाला जा सकता है।

घीया को पीसते समय पोदीना के 5-6 पत्ते तथा तुलसी के 8 पत्ते उसमें डाल दें। फिर पिसे हुए घीया को कपड़ाछान करके उसका रस निकाल लें। उस रस की मात्रा 125-150 ग्राम होनी चाहिए। इसमें इतना ही सवच्छ जल मिलाएं। अब यह 250 से 300 ग्राम रस हो जाएगा। इस रस में चार काली मिर्च का चूर्ण तथा एक ग्राम सेंधा नमक मिला लें। अब इस रस को भोजन करने के आधा या पौन घंटे के पश्चात सुबह-दोपहर एवं रात्रि में तीन बार लें। प्रारम्भ में 3-4 दिन तक रस की मात्रा कम भी ली जा सकती है। रस हर बार ताजा लेना चाहिए। प्रारम्भ में यदि पेट कुछ गड़बड़ महसूस हो तो चिन्तित न हो। घीया का यह रस पेट में पल रहे विकारों को भी दूर कर देता है। तीन बार औषधि लेने में कठिनाई हो तो आधा-आधा किलो घीया इसी प्रकार सुबह-शाम लिया जा सकता है।

घीया पहले पांच दिन तक लगातार लेना होगा, फिर 25 दिन का अन्तराल देकर, पांच दिन तक लगातार लें। इस प्रकार कम-से-कम तीन महीने तक लेना होगा। उपचार के दौरान कोई भी खट्टी वस्तु न लें। न तो खट्टे फल, न टमाटर, न नींबू।

हृदयरोगियों को मांस, मदिरा, धूम्रपान आदि का पूरी तरह त्याग करना आवश्यक है। चार-पांच किलोमीटर टहलना भी जरूरी है।

प्रथम पृष्ठ का शेष

है कि 30 प्रतिशत के साथ किसी तरह 70 प्रतिशत का आधा हिस्सा अपने साथ मिलाओ और राज करो। इसका अर्थ यही हुआ कि हिंदू समाज को अपनी कमजोरी का पूरी तरह से लाभ उठाने का नाम ही है जय भीम और जय मीम का नारा।

मैं एक बार अमृतसर में कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ। वहां पर एक 90 वर्ष के व्यक्ति द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन किया गया। जिस पुस्तक का विमोचन हुआ उस पुस्तक का नाम था "भारत और पाकिस्तान विभाजन" लेखक ने पुस्तक की विषयवस्तु के विषय में विस्तार से वर्णन किया कि इसमें मुस्लिमों की नीति, महात्मा गांधी, कांग्रेस की नीति और विभाजन के अनेक अन्य कारण मैंने बड़ी सावधानी से लिखे हैं। तभी वहां पर बैठे एक व्यक्ति ने कहा कि भाई इस पुस्तक में आपने परिश्रम खूब किया। लेकिन भारत के विभाजन का कारण जानने के लिए यह पुस्तक पढ़ना जरूरी नहीं है क्योंकि विभाजन का कारण एक ही था कि उनकी जनसंख्या वहां पर ज्यादा थी और हमारी कम थी इसीलिए विभाजन हो गया। वो वहां पर ताकतवर थे हम कमजोर थे। इसलिए बंटवारा हो गया। इसका अर्थ है कि हमारी कमजोरी ही इस जय भीम और जय मीम का जो षड्यन्त्र है वह कारण बन गई। हिंदुओं में प्रचलित जातिवाद को आप सब जानते हैं। यह जातिवाद की बीमारी को जबरदस्ती पैदा करवाया गया। हमारी पुस्तकों के भाव अर्थों को बदल कर, वेदों के गलत अर्थ करके, मनुस्मृति का गलत अनुवाद करवा करके ही कुछ तथाकथित ब्राह्मणों को अपने साथ मिलाकर इस तरह की भ्रान्तियां फैलाई गई कि दलित हमारे नहीं हैं। दलितों के साथ मिलकर के रहना, उनके साथ खड़ा होना धर्म की तौहीन है, धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। सबसे बड़ा एक झूठा प्रचार यह भी किया गया कि हिंदुओं में जातिवाद है। हिंदू समाज एक-दूसरे के साथ खड़ा होना पंसद नहीं करता। हिंदू के मंदिरों में दलितों के घुसने पर पाबन्दी है जबकि मुस्लिमों के यहां पर इस तरह की कोई पाबन्दी नहीं है। यह सबसे बड़ा झूठ है इससे बड़ा झूठ और कुछ समाज में हो नहीं सकता।

इस भयंकर झूठ को आप एक उदाहरण से समझिए। एक अगड़ी जाति और एक पिछड़ी जाति के दो अच्छे मित्र थे। उनकी आपस में अच्छी दोस्ती थी। उन दोनों के बीच में एक तीसरे मुस्लिम व्यक्ति ने आकर अगड़ी जाति के महानुभाव को समझाया कि तुम बड़ी जाति के हो और तुम उसके साथ में बैठकर खाना खाते हो। तुम्हें शर्म नहीं आती? तुम्हारे को लेकर सारे लोग थू-थू करते हैं कि ऐसे नीची जाति के साथ में बैठकर के खाना खाते हैं। उस आदमी ने उस अगड़ी जाति के व्यक्ति के दिमाग में एक बीज बो दिया नफरत का। अगले दिन जब वह पिछड़ी जाति का व्यक्ति लंच टाईम में भोजन करने के लिए बैठा तो अगड़ी जाति के व्यक्ति ने कहा कि मैं थोड़ी देर में भोजन करूंगा। अत: आप कर लीजिए। अब मुस्लिम ने देखा कि उसके अंदर बीज अंकुरित हो गया है तो अगले दिन उस पिछड़ी जाति के व्यक्ति के पास जाकर के उसने कहा क्या बात है भाई, आज रोज की तरह उसके साथ बैठकर खाना नहीं खा रहे। आज उसने अपने साथ में खाना क्यों नहीं खिलाया? फिर वह कहने लगा कि मुझे पता है कि तुम पिछड़ी जाति के हो। इस बात का उसे पता चल गया है इसलिए उसने किनारा कर लिया है और इस तरह दोनों की जो मित्रता थी वो खत्म हो गई और कुछ दिनों के बाद ही उस मुस्लिम व्यक्ति ने उस पिछड़ी जाति के व्यक्ति को अपने साथ मिलाकर खाना शुरू कर दिया और रोजाना कभी अपने घर से खाना लाए और कभी उसके घर से खाना खाए। दोनों अच्छे मित्र बन गए। और उसने अपने षड्यन्त्र को यहीं पर समाप्त नहीं किया बल्कि फिर उस अगड़ी जाति वाले के पास जा करके कहा कि हमने तो सुना था कि अगड़ी जाति वाले पिछड़ी जाति वालों से परहेज करते हैं लेकिन अब तो उल्टा हो गया। पिछड़ी जाति वाले ही अगड़ी जाति वालों के साथ बैठना नहीं चाहते और इस तरह से उसने नफरत का इतना बड़ा बीज बो दिया और उस पिछड़ी जाति वाले को अपने साथ मिला लिया।

इन तीनों के बीच एक चौथे आदमी ने उस पिछड़ी जाति वाले आदमी से पूछा कि क्या बात है भाई आजकल शर्मा जी के साथ बैठकर भोजन नहीं करते? तो उसने बताया कि भाई क्या बताऊं जब शर्मा जी को पता लगा कि हम पिछड़ी जाति के हैं तो उन्होंने हमारे साथ खाना-पीना बंद कर दिया और ये बड़े महान हैं।

ये हमारे लिए खाने भी लाते है और हमारा खाना भी खाते है। हमारा झूठा खाने से भी परहेज नहीं करते। तब उस आदमी ने कहा कि भाई बात यह नहीं है, अगर हकीकत जानना चाहते हो तो एक दिन हमारे साथ चलो। तब पता चलेगा कि असली जातिवाद कहां पर है? वह उसे एक मस्जिद में लेकर गया और उसने कहा कि यहां अंदर जाकर जब कोई पूछे कि तुम कौन हो तो बताना कि मैं जमाती हूं। उस आदमी ने कहा कि जमाती मुसलमान नहीं होते? उसने कहा कि होते हैं लेकिन जरा जाकर कहकर तो देखो और जब वह अंदर गया तो उससे पूछा कि आप कौन है, कौन सी जात के हैं। इस आदमी ने आश्चर्य से कहा कि जमाती हूं तब उस आदमी ने कहा कि बाहर बोर्ड पर लिखा हुआ है कि जमातियों को यहां आना मना है। जब उसने बोर्ड पढ़ा तब उसकी आंखें खुल गई। बोर्ड पर साफ-साफ लिखा हुआ था कि यह मस्जिद सुन्नी मुस्लिम हजरत के मानने वालों की है। यहां पर देवबन्दी, जमाती, तबलिगी का आना सख्त मना है और अगर कोई यहां आएगा तो उसके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी।

हिंदुओं के मन्दिरों में कहीं पर भी ऐसा कोई बोर्ड क्या कभी किसी ने देखा है कि इस मन्दिर में दलित, आदिवासी, वनवासी या किसी भी जाति का प्रवेश वर्जित है। चाहे दलितों को मनाही हो, लेकिन लिखित में ऐसा बोर्ड कहीं दिखाई नहीं देता। मुस्लिमों के यहां पर शादियों में भी कार्ड पर स्पष्ट लिखा होता है कि इन मुस्लिम जातियों के लोग दावत में न आएं। उनके यहां कब्रिस्तान में भी खांस इनस्टेक्शन होती है। क्या इससे निकृष्ट जातिवाद के उदाहरण कहीं मिल सकते हैं। लेकिन इन बातों का इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया में कहीं प्रचार नहीं हुआ और हिंदुओं का प्रचार होता रहा है कि हिंदू जातिवाद को मानते हैं। अगर मुस्लिम जातिवाद की बात समाज में पता चले तो साफ हो जाएगा कि असली जातिवाद कहां पर है?

- *शेष पृष्ठ 7 पर*

Benefits of Havan or Dev Yajna

Sh. Ramesh Gupta MD,
Formal President APSA

Vedic literature describes Yajnas for our material progress and for cleansing of the environment. The word 'Yajna'has very wide connotations. All creative activities are included in Yajna. Shatpath Brahaman states 'यज्ञोवैश्रेष्ठतं कर्म', which means doing Yajna is of supreme significance. Vedic literature defines Yajna as appropriate utilization and giving respect to devas such as the 5 elements of nature, company of holy souls and giving. We will briefly describe the five compulsory Yajna to be performed by every householder:

1. Brahma-Yajna, also called *Sandhya* (Meditation)

2. Deva-Yajna, also called *Havan* (Fumigation by Fire)

3. Pitri-Yajna (Serving the Elders)

4. Atithi-Yajna (Serving the Noble Guests)

5. Balivaishvadev-Yajna (Serving the Dependants)

Deva-Yajna is also called Havan (Fumigation by Fire). In the excavations such as Mohenjo-daro and many others, alters have been found with no trace of any idols or murti, indicating that performing Havan is an age-old tradition, but murti worship is not. Both Valmika Ramayan and Maha-bharat are also the testimony of the same. At multiple places, it has been mentioned that both Shri Ram and Shri Krishna used to perform Havan. Ramayan mentions that sage Vishvamitra had to take the help of Shri Ram and Laxman to help him kill the demons who were intercepting the Havan practices. Actually,Havan alters were at times research labs. For example, Sage Vashishta prepared some sort of medicine through Havan, which was given to the 3 queens of Dashrath and then they were able to conceive and the 4 brothers, Shri Rama, Shri Laxman, Shri Bharat and ShriShatrughna were born. There are many such examples mentioned in our scriptures. Even Ravan and Meghnath performed prolonged havan and meditation to give them some sort of additional powers and tools to help them try to win wars. In recent times there are examples such as Bhopal Gas disaster. In that situation, it was noticed that apparently those who were performing regular Havan at their homes were somehow affected less adversely than the others. There are stories of much needed rains and to be able to stop the torrential rains by performance of a prolonged Havan or even cure diseases such as tuberculosis. It is very difficult to accept these claims as such or reproduce them in any predictable manner. All these are anecdotal stories, but have been mentioned so many times and at so many places including the authentic Vedic literature, that there seems to be at least some value in these. Now,

I will describe the possible logic behind such claims and then mention the potential benefits from the performance of Dev Yajna or Havan.

Procedure of Yajna : Before performing Havan, it is expected that the individual, couple, family or group of people sit down comfortably and attentively with positive thinking, having in mind that God is all pervading and that they accept the presence of all-pervading God and are being protected by him as well. During the performance of Havan, Ved mantras are recited and a certain procedure is followed. After the fire is kindled, at least 3 wood sticks called **Samidha** are placed. Then Ghee and herbal substances with medicinal values, called **Samigri**are offered in the fire as well. This procedure or ritual has both spiritual and physical benefits. Recitation of Ved mantras create powerful vibrations, leads to inner peace and acts as meditation and on the physical side, scholars in this field/sages have explained that when specialized formulations of herbal substances are put in fire in certain proportions and in a certain way, the overall combination, the resultant gases or fumigate enters into the environment making the air more healthy and energized along with getting rid of many disease producing germs.

Benefits: Our scriptures have mentioned that Dev Yajna is highly beneficial for all living beings. It consists of three elements:

a) Worship (देवपूजा) - we pay respect towards the almighty God.

b) Positive Assimilation (संगतिकरण) – we bring a number of positive things together for this purpose. Also, we assemble together to perform Havan and organize discourses on such occasions.

c) b) Charity (दान)– we put in oblations of herbal substances into the fire and thus give away good things for the benefit of others.

Here is the list of potential medical benefits that have been suggested from the performance of Havan:

1. Cleansing of atmosphere with fragrant medicinal herbs as they multiply many folds as they are put in fire. There have been claims of pollution reduction and reduction of global warming and noise reduction through it as well. A properly performed Havan with proper alter or Havan Kund should not produce much smoke at all.

2. Controlled rains as needed as opposed to too much or too little rains. As per Manusmriti-

'अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते,
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्न ततः प्रजाः।'

Which means the materials when placed in Havan Kund reach atmosphere, makes rains, which is needed for crops and sustenance of life as a whole.

3. Cure of illnesses: When the air, now purified and medicated through the Havan is inhaled, it helps in certain digestive and respiratory disorders and helps purify our blood as has been claimed. Cure of infectious diseases such as tuberculosis has been claimed. Until recently, it was a regular practice to burning medicinal sticks in the room in which new born and the mother were housed for several days after the baby was born to keep the atmosphere there free of germs. Use of large amounts of Samigri while performing last rights is also to make the atmosphere pollution neutral. Specific mantras have been mentioned to heal or cure certain illnesses such as eye disorders, hemorrhoids, fever, jaundice, lymphadenopathy, abortion, infectious diseases.

4. Mental illness such as depression: There is no question that disciplined life with clean body and mind while following dharma will diminish chances of depression and negative thoughts. Dependence of drugs and addicting substances will be lower as well. It is only natural to think that having deep faith in all knowing, all pervading God and performance of Sandhya and Havan (when these are not being done as mere rituals) will lead to high self-esteem and self-confidence. **The net result certainly will be high performance level in all walks of life. One will be a better citizen, a successful family member and useful member of society as well.**

Therefore, one should perform *Deva-Yajna* as much as possible. This is a paramount duty at par with the studying and teaching of the Vedas.

वेद-स्वाध्याय

तेरे बहु पाश में

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमा: प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम।।–ऋक्. 10/121/4
ऋषि: **हिरण्यगर्भः प्राजापत्यः**।। देवता – **कः**।। छन्द: **विराट्त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ – यस्य = जिसकी **महित्वा** = महिमा को **इमे हिमवन्तः** = ये बर्फीले पहाड़ **आहुः** = कह रहे हैं और **यस्य** = जिसकी महिमा को **रसया सह** = नदियों–सहित **समुद्रम्** = यह समुद्र कह रहा है **इमाः प्रदिशः** = ये प्रकृष्ट दिशाएँ **यस्य** = जिसके **बाहू** = भुजाओं के समान हैं **कस्मै** = उस सुखस्वरूप **देवाय** = प्रजापति देव का हम **हविषा** = हवि द्वारा **विधेम** = पूजन करें।

विनय – क्या तुम पूछते हो कि हम किस देव की उपासना करें? यह देखो, ये ऊँचे–ऊँचे पर्वत, ये हिम से ढके हुए, आकाश से बातें करनेवाले उन्नत पर्वत–शिखर जिसकी महिमा को गा रहे हैं, यह समुद्र, यह दिग्–दिगन्त तक फैला हुआ असीम दिखाई देनेवाला विस्तृत समुद्र, अपने में आ–आकर गिरनेवाली नदियों के सहित जिसके ऐश्वर्यों का बखान कर रहा है और ये दिशाएँ जिस देव की हैं, ये अनन्त दिशाएँ जिसके फैले हुए बाहुओं के समान हैं, उस देव को, हे मनुष्यो! तुम पहचानो। ये ऊँचे खड़े हुए गगनचुम्बी विशाल पर्वत यदि तुम्हें किसी महान् रचयिता की ओर इशारा करते हुए दिखाई देते हैं, संसार के ये अपार पारावार अपनी लहरों में उमड़ते हुए यदि तुम्हें किसी अद्भुत शक्ति का स्मरण दिलाते हैं और ये प्रकृष्ट दिशाएँ जिसकी बाहु हैं–ऐसा ध्यान करने पर यदि तुम्हें कोई विराट् पुरुष अनुभवगोचर होता है तथा इन दिशाओं में फैले हुए संसार के देखने पर यदि तुम्हें इस सबका जीवन और प्राण होकर इसमें रमे हुए किसी आत्मा का दर्शन होता है तो वही एकमात्र देव है जोकि हम सबका उपास्य है, आराध्य है। वह 'क' नाम का देव है, वह सुखस्वरूप है। वह प्रजापति है, हम सब–के–सब उसकी प्रजा हैं। आओ, हम सब प्रजानन, हम सब पुत्र उस परमदेवको नमस्कार करें, अभिमान को त्यागकर उसके चरणों में अपना मस्तक नमाएँ और अपने तुच्छ सर्वस्व की भी भेंट देकर उस आनन्दस्वरूप का पूजन करें।

–: साभार :– वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

Makers of the Arya Samaj : Pt. Guru Dutt ji

Continue From Last issue

.....while his class-fellows read only their textbooks, he read other books also. One of these books awakened in him his deep spiritual nature. After reading it, he began to repeat certain words which have a spiritual meaning. He also learnt how to control his breath. One day his mother saw him doing this. She felt annoyed and asked him to give it up. But he replied, "Dear mother, look at the sky. The moon is shining there and the stars are twinkling. Then look around on earth. You find beautiful, green trees every where. Among their branches small birds sing their del ightful songs. Don't you think there is someone who made all these things? It is to find Him that I am making efforts. Please do not feel annoyed with me. Father has said to me many times that we should all seek God. Why not let me try in my own way?" This was the beginning ofhis spiritual life.....

At school he was not merely known as a bookworm. He had the reputation of being a very robust young man. He took long walks and could bear extremes of heat and cold. He was very fond of cricket and manly exercises, He even took part in races, in which he did well.

At the same time, he enjoyed the reputation of being honest and truthful. Once there was some trouble in the class. Guru Dutt and one of his friends were on one side and the remainder ofthe students were on the other. But the Headmaster believed these two and not the rest. It is said an appeal was sent against the decision of the Headmaster to the Inspector. But he also decided the matter on the evidence of these two young men.

Even at this time of his life he liked to meet sadhus. One such person came to Multan. Though an old man of one hundred and twenty, he looked as ifhe was only thirty years old. He ate very little and had no grey hair on his head. Guru Outt often went to see him and asked him many questions about yoga, the Vedas and other subjects. This showed how much he was interested in these matters even when he was young.

In January, 1881, Guru Dutt joined the Government College, Lahore, There he had classmates who afterwards became very famous. Some of these were Mahatma Hans Raj, L. Lajpat Rai, Prof. Ruchi Ram and Raja Narendra Nath. At Lahore it did not take Guru Dutt long to establish himself in the estimation of his classmates and professors. Everyone looked upon him as an extraordinary young man. He won every heart with his ability and good behaviour. His mind was pure, his thoughts were noble, his learning was very wide and he could express himselfwith power. All these things made him beloved in the eyes of everybody.

At college he devoted most of his time to study. He read the works of John Stuart Mill, a great English philosopher. He was especially fond of his autobiography, which he read over and over again. He also read such philosophers as Bain, Bentham and Bradlaugh. In addition he studied literature and mathematics. His appetite for reading could never be satisfied.

In spite of reading so many different subjects he came first in the Intelmediate examination. Everybody marvelled. It was thought very strange that this should have happened, for Guru Dutt was more interested in general books than in his own textbooks. He was also very fond of attending public lectures and meetings, and seemed to take very little interest inhis college work.

While he was at college he founded the Free Debating Club. He himself acted as its secretary. All the best students ofthe college belonged to this club. All kinds of subjects, religious, moral, social and political, were discussed at its meetings. Though this club did not last more than two or three years it did much good. In the first place, it taught young men to express their ideas without hurting anybody's feel ings.It also added to their store of information. Above all, it taught them that there was no conflict between science and religion. Many of the young men who did not believe in God before joining it, came to have faith in Him afterwards.

Guru Dutt himselftook a leading part in all these debates. Those who heard him at that time learnt how widely he had read and with what force he could argue. But This was not the only public activity in which he took part. He was a member ofthe Arya Samaj and used to edit an English weekly for it. He also started a school of science in connection with theArya Samaj. A large number of people used to attend these classes. Its purpose was to spread knowledge and banish superstition.

In 1883, when Guru Dutt was a third year student, he heard that Swami Dayanand was dangerously ill. L. Jiwan Das and he were at that time asked by the Lahore Arya Samaj to go to Ajmer and look after Swami ji. Guru Dutt willingly and gladly consented to do so. He went to Ajmer and stayed there for about a month. During that time he served Swamiji with a devotion worthy of a son.

Guru Dutt was near Swami] i when he lay on his deathbed. Swam ij i was at that time calm and fearless. He repeated the Gayatri Mantra very often and died saying, "Peace, peace, peace. They will be done." His death had a great effect on Guru Dutl. He felt that there was nothing so good in this world as faith in God. He also thought that every member of the Arya Samaj should carry on the work of Swami ji. He practically made up his own mind to do so.

On his return to Lahore he gave an account of the last days of Swami Dayanand. He also gave active support to those who wanted to found the D.A.Y. College. He helped the cause not only with his speeches but also gave his own money. He gave away twenty-five rupees, his one month's scholarship, for this purpose.

In 1885 he gave his first public lecture in English at Lahore. That year he passed the B.A. examination. It was really remarkable that, with so many other activities, he should have come first amongst the successful candidates. It was all the more remarkable in view ofthe fact that his health had been rather bad that year. He had also been devoting much of his time to the Arya Samaj.

At that time the Arya Sama j was confronted with two very important questions-the formation ofthe D.A.V. College Managing Committee as well as that of the Provincial Representative Assembly. Both these matters provoked a good deal of discussion. But it was Guru Dutt's intelligence and eloquence that helped in solving these questions. Though much of his time was given to the Arya Samaj, he did not neglect his inner life. At that time he wrote in his diary, "One who loves God never cares for wealth. I wish India were inhabited only by lovers of God." This shows how keenly he felt the need of spiritual devotion.

In 1886 he passed the M.A. examination in Physics. That year he was appointed Assistant Professor of Physics in the Government College, Lahore. Though his work in the college was very difficult, yet he did it very ably. The Arya Samaj also claimed a great deal of his time. At that time it needed a man oflearning who also had faith in its mission. Such a man was Guru dutt. He had to go about from place to place, therefore, to explain its mission.

Pt. Guru Dutt was an untiring worker who read a great deal. For Instance, at this time he studied the system ofIndian medicine. After doing so he came to believe that this was the only system suited to Indians. He also wrote a great deal. An English weekly called *The Arya Patrika* had been started by the Arya Samaj. He wrote a large number of articles for this paper. He also delivered a great number of lectures. These were very learned, being the result of much study. He took part in all these activities in addition to his work at the college.

In 1887 Pandit ji was appointed the associating Professor of Physics. He taught so well that all his students passed. During this year he and some others visited a large number of places like Aligarh, Bareilly, Muradabad, Lucknow, Benares, Allahabad, Kanpur and Farukhabad in the U.P. The purpose of this deputation was to collect funds for the Dayanand Anglo- Vedic College, Lahore. Wherever he went he delivered lectures. In these he dwelt on the glories of the ancient Aryan Civilization. He believed the Vedas to be inspired books. He thought that everybody should read them. In his lectures he often laid emphasis on Brahmacharya (celibacy). He believed this to be the only way to strengthen one's character. He repeatedly asked his hearers not to run after the things of this world, but to save their own souls. He told them that the best thing was to practise what they believed in.

At a time when everybody was marvelling at Western civilization, he told people of the glories of East em civilization. He said that the D.A.V. College, Lahore, was founded to spread the message of the Vedas and to strengthen people's faith in Brahmcharya. Therefore, it deserved the support of everybody.

But during these days his life was darkened by the illness of his father. He was an affectionate and obedient son and felt it his duty to do everything to please him. He cut out many public engagements in order to be near his father. One day he received a telegram saying that his father had died. He wired back that the body should not be burnt till he had arrived. He then left for Multan at once. On reaching there he made up his mind to bum his father's dead body according to the Vedic rites. He was afraid lest his mother should stand in his way, but she did not. The members of his community did, however. They threatened him with social boycott, but he did not care. In the end, he had his way, then everybody admired him for his moral courage.

Pt. Guru Dutt came back to Lahore after this. There he found that preparations were being made for the tenth anniversary oftheArya Samaj. He was invited to deliver two lectures, one in Hindi and the other in English, and he agreed.

This is what *The Arya Patrika* wrote about his lectures at the time. "Pandit j i addressed an audience consisting of about three thousand people. All these people listened to him with undivided attention. He expressed his ideas with great enthusiasm and sincerity.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

जीवन में सफलता कैसे प्राप्त करें

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

.....'सदैवोद्यत भाव' इसका अर्थ यह है किसी कार्य के करने के लिये सदा तैयार रहना। 'जीवन्नरो भद्र शतानि पश्येत्' व्यक्ति के जीवन में अनेक सुअवसर आते हैं। परन्तु जो उनके लिये तैयार रहता है वह ही उनसे लाभ उठा सकता है। एक चित्रकार ने समय का चित्र बनाया जिसके बाल मुख पर फैले हुये थे और पीछे से गंजा था। उसके दो पंख लगे हुये थे। पूछने पर उसने बतलाया कि यह समय का चित्र है। .....

गतांक से आगे -

कार्य योजना बनायें

अंग्रेजी में कहावत है- 'Well begin is half done' जिस कार्य का प्रारम्भ योजनाबद्ध होकर किया जाता है उसे पूरा होने में देर नहीं लगती। यदि किसी प्रकार का व्यवधान आ भी जाये तो उसे दूर कर लिया जाता है। जिन नावों को किनारे लगने का पता है वे ही किनारे तक पहुंच पाती हैं। जो कार्य आपने प्रारम्भ किया है उसे पूरा करने का आत्म विश्वास, आपकी क्षमता, संसाधन और मार्ग में आने वाली बाधाओं से मुकाबला करने का सामर्थ्य भी होना चाहिये। योजनाबद्ध होकर कार्य करने से आपकी शारीरिक और मानसिक ऊर्जा एक ही स्थान पर केन्द्रित रहेगी तथा वह कार्य समय पर पूरा हो जायेगा।

असफलता से सीखें

सभी कार्यों में पहली बार ही सफलता मिले इसकी गारण्टी नहीं दी जा सकती। कोई व्यक्ति दौड़ रहा है और मार्ग में गड्ढ़ा आ जाने से गिर पड़ता है। बुद्धिमानी इसी में हैं कि वह उठ खड़ा हो और पूरी सावधानी के साथ दौड़े जिससे आगे आने वाले गड्ढ़ों से सुरक्षित रहे। एक वैज्ञानिक किन पेड़ पौधों से पैट्रोल प्राप्त हो सकता है इसका अनुसन्धान कर रहा था। हजारों वनस्पतियों में जब पैट्रोल उपलब्ध नहीं हो पाया तो साथियों ने कहा इस योजना को छोड़ दिया जाये। परन्तु उसने कहा कि मेरी खोजबीन से इतना तो ज्ञान हो गया कि इनमें पैट्रोल नहीं हूँ। कोई भी असफलता हमें सावधान होकर कार्य करने की प्रेरणा देती है। कई बार ऐसे भी प्रसंग आये हैं जब लक्ष्य हो कदम ही आगे था और उसे प्राप्त करने का विचार छोड़ दिया गया। इसलिये असफलता भी सफलता को प्राप्त करने का एक प्रयास ही मानना चाहिये।

सदा तैयार रहना

जो पहले श्लोक में कहा गया- 'सदैवोद्यत भाव' इसका अर्थ यह है किसी कार्य के करने के लिये सदा तैयार रहना। 'जीवन्नरो भद्र शतानि पश्येत्' व्यक्ति के जीवन में अनेक सुअवसर आते हैं। परन्तु जो उनके लिये तैयार रहता है वह ही उनसे लाभ उठा सकता है। एक चित्रकार ने समय का चित्र बनाया जिसके बाल मुख पर फैले हुये थे और पीछे से गंजा था। उसके दो पंख लगे हुये थे। पूछने पर उसने बतलाया कि यह समय का चित्र है। मुख पर बाल इसलिये हैं कि लोग इसे पहचानते ही नहीं। पंख इसलिये लगाये हैं कि यह बहुत तेजी से उड़ता है जो इसे पहचान कर आगे से पकड़ लेते हैं वे ही करोड़पति या प्रतिष्ठा को प्राप्त करते हैं। पीछे से गंजा इसलिये है कि एक बार निकल जाने पर इसे पकड़ना सम्भव नहीं है। स्मरण रखो

अभी समय है अभी नहीं कुछ भी बिगड़ा है।
देखो अभी सुयोग तुम्हारे पास खड़ा है।।
करना हो जो कार्य उसी में शक्ति लगा दो।
अपने पर विश्वास करो आलस्य भगा दो।।
आलस ही है करा रहा ये सभी बहाने।
करना हो सो करो अभी कल हो क्या जाने।।

आओ सफलता की इस सीढ़ी पर एक एक पैर आगे बढ़ते हुये सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने का अभियान प्रारम्भ करें।

पृष्ठ 4 का शेष

हमें जय भीम और जय मीम के नारे को केवल चर्चा का विषय नहीं बनाए रखना चाहिए बल्कि असलियत का पूरा प्रचार करना चाहिए। उन्होंने हिंदू समाज की सबसे बड़ी कमजोरी गरीबी को समझा और दलितों के साथ खड़े हो गए। उन्होंने झूठा ढोंग करके उन्हें अपना बना लिया फिर हमारे ही लोग कहने लगे कि अब तो यह मुसलमान बन गया। हमारा नहीं हो सकता। इस तरह पूरा हिंदू समाज टूटन की कगार पर है। मोपला जो केरल में घटना घटी थी उसको हमें अपने परिवार और बच्चों को जरूर बतानी और पढ़ानी चाहिए। केरल में मसालों का व्यापार होता था और वहां पर अरब के व्यापारी आते थे। केरल से सस्ते मसालें ले जाकर के वे अरब में महंगे दामों में बेचा करते थे। जब केरल के राजा को यह बात पता लगी तो उसने कहा कि हम खुद इस व्यापार को क्यों नहीं करते? अगर हमारे आदमी वहां जा करके मसाले बेचें तो हम ज्यादा लाभ कमा सकते हैं और राजा ने यह सुनिश्चित कर दिया कि अब हम स्वयं व्यापार करेंगे। तभी वहां के पण्डितों ने कहा कि अगर हिंदू इस व्यापार के लिए समुद्र पार करेंगे तो उनका धर्म भ्रष्ट हो जाएगा, इसलिए हिंदू तो समुद्र पार नहीं कर सकता। फिर सुझाव दिया गया कि हमारे हिंदुओं की जो सबसे नीची जाति हैं उसे वहां कनीज कहते थे उस जाति के परिवार के एक-एक व्यक्ति को मुस्लिम बना दिया जाए और उनको वहां जाकर व्यापार करने की अनुमति दे दी जाए, इससे उनका धर्म तो भ्रष्ट नहीं होगा क्योंकि वह मुस्लिम बन गया। राजा ने अपनी राज आज्ञा दे दी और कनीज जाति के बहुत से लोग मुस्लिम बन गए। और उनको मुस्लिम बनाने के लिए भी अरब का मौलवी ही आया था। फिर जब वो लोग व्यापार करने लगे तो उनको हिंदुओं ने अपने में शामिल नहीं होने दिया और वहां पर पिल्ले भाई को कहते हैं और महापिल्ले बड़े भाई को कहते हैं। इसी पिल्ले भाई और महा पिल्ले शब्द पर मोपला मुस्लिम जाति का निर्माण हो गया और जब ये बहुत सारी संख्या में हो गए तो अरब के मुस्लमानों ने ही इन्हें उकसाया और कहा कि ये हिंदू समाज ही आपका दुश्मन है। या तो इन्हें मुस्लिम बनाओ नहीं तो इन्हें मारो। तब इन्होंने वहां पर एक बहुत बड़ी घटना को अंजाम दिया। हिंदुओं के ऊपर कत्लेआम किया। अब इस घटना को 100 साल पूरे होने वाले है। जय भीम और जय मीम के नारे का अंजाम समझने के लिए मोपला पुस्तक को अवश्य पढ़ें।

समाधान - कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर की वो पंक्ति को हमें अवश्य समझनी और अपनानी चाहिए कि **आर्यों लगा लो गले से इन्हें, वरना ये लाल गहरो के हो जाएंगे** आज की परिस्थितियों में इस कविता की पंक्ति से प्रेरणा लेने की बहुत जरूरत है। देश की रक्षा के लिए हमें दलित समाज के बच्चों के लिए, उनके परिवारों के लिए सेवा के प्रकल्पों का संचालन करना चाहिए। सब को अपनी तरफ से इसमें सहयोग देना चाहिए। बच्चों की पढ़ाई के लिए, उनके बच्चों की शादियों के लिए और उनके सम्रग उत्थान के लिए हमें योगदान अवश्य देना चाहिए। हमारे सामने इस समय जय भीम और जय मीम के अलावा वामपंथ और बौद्ध धर्म भी अपने आपमें चुनौती है। क्योंकि दलित को आरक्षण का लाभ मिलता है, मुस्लिम और ईसाई बनने पर वह लाभ समाप्त हो जाता है। इसलिए वामपंथियों ने यह नई चाल चली है कि दलितों को बौद्ध धर्म में प्रवेश करवाया जाए, जिससे उन्हें आरक्षण का लाभ मिलता रहें और जब वे हिंदू जाति से अलग हो जाएंगे तो फिर उन्हें अपने हिसाब से चलाने में सफल हो जाएंगे। अब यहां पर आप यह भी समझें कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने मुस्लिम, इसाई, वामपंथी और बौद्ध धर्म के विषय में स्पष्ट रूप से सत्यार्थ प्रकाश में लिखा हुआ है कि किस तरह हमें इनसे जीतना है, इसलिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें और उसे अमल में लाएं। आर्य समाज के गुरुकुलों में पढ़ने के लिए भी किसी की जाति-पाति नहीं पूछी जाती। आर्य समाज ने हमेशा उन्हें विद्वान बनाने का कार्य किया है अत: इन अपने भाईयों को हमें अपने शिक्षण संस्थानों में पढ़ने की सुविधा प्रदान करनी चाहिए और तीसरी बात कि अपने आस-पास में किसी भी दलित व्यक्ति को चाहे वो धोबी हो, चौकीदार हो, ड्राइवर हो, कुम्हार हो, नाई हो या कोई भी माली हो उसे अपना भाई बनाएं। वर्ष में कम से कम एक बार किसी त्यौहार पर उसके पास जाएं और उसको अपने घर बुलाएं। चौथी बात वहीं है कि हमें मुस्लिमों के अंदर जो जातिवाद छुपा हुआ है उसको हमें उजागर करना चाहिए। तो जय भीम और जय मीम का निरंतर विष घोलने वाले सफल नहीं हो पाएंगे और इसके लिए जागते रहो और जगाते रहो का कार्य करते रहना चाहिए।

शोक समाचार

श्री जगदीश चन्द्र पसरीजा नहीं रहे

आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के मन्त्रीश्री दीनानाथ वर्मा जी के मित्र, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदश एवं विदर्भ के पूर्व प्रधान माता कौशल्या देवी जी के भ्राता एवं आर्यसमाज बैजनाथ पारा, रायपुर (छत्तीसगढ़) के पूर्व प्रधान श्री जगदीश चन्द पसरीजा जी का 1 जनवरी, 2021 को लगभग 80 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

श्री जयसिंह वर्मा जी 'सत्यार्थभूषण' का निधन

आर्यसमाज सागरपुर, नई दिल्ली के पूर्व मन्त्री श्री जयसिंह वर्मा 'सत्यार्थ भूषण' जी का दिनांक 3 जनवरी, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 4 जनवरी को पूर्ण वैदिक रीति के साथ सैक्टर-24 द्वारका के शमशान घाट में किया गया।

श्री हरिसिंह आर्य जी को भ्रातृशोक

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के संगठन मन्त्री एवं आर्यसमाज सागरपुर के सम्मानित सदस्य श्री हरिसिंह आर्य जी के ज्येष्ठ भ्राता श्री अमींचन्द जी का दिनांक 26 दिसम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री कृष्णचन्द्र आर्य जी का निधन

आर्यसमाज सुन्दर नगर कालोनी, जिला मंडी (हिमाचल प्रदेश) के संस्थापक श्री कृष्णचन्द्र आर्य जी का दिनांक 1 जनवरी, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। वे अपने भाई के साथ मिलकर एक अनाथालय का भी संचालन करते थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 4 जनवरी, 2021 से रविवार 10 जनवरी, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 07-08/01/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-22-2023

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 6 जनवरी, 2021

आप भी बनें यज्ञमित्र

कम से कम 12

नए परिवारों में यज्ञ कराएं

दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र एन.सी.आर. में यज्ञमित्र बनने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सतीश चड्ढा जी

महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

मो. 954004141, 9313013123

प्रतिष्ठा में,

भारत के सांस्कृतिक सन्तुलन की रक्षा - हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001, मो. 9540040339

बच्चों को दें ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से भरपूर शहीदों की अमरकथाओं पर आधारित कॉमिक्स

प्राप्ति स्थान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

मो. 9540040339

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

(उर्दू भाषा में अनुवाद)

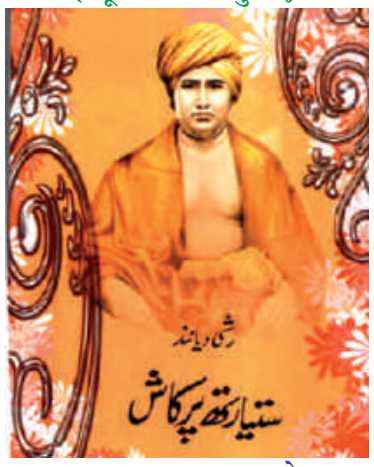

मूल्य मात्र 100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)

के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्र. सभा, मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह